International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के कम्प्यूटर शिक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों की समस्या–समाधान योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन।

सुरेश कुमार, अनुसंधानकर्ता, सिंघानिया विश्वविद्यालय,पचेरी बड़ी,झुन्झुनू (राज.)

सार–

वर्तमान शोध में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में कम्प्यूटर शिक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों की समस्या समाधान क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। सैम्पल के तौर पर माध्यमिक स्तर पर 100 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। इसमें क्षेत्र के आधार पर ग्रामीण क्षेत्र के जोधपुर जिले के 50 और शहरी क्षेत्र के 50 छात्र–छात्राओं को कंप्यूटर शिक्षा में शामिल किया गया है. शोध के लिए सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग कर डेटा का संग्रह, समस्या समाधान क्षमता के लिए, श्री एल.एन. दुबे मानकीकृत परीक्षण का उपयोग किया गया है, इसका विश्लेषण लागू आंकड़ों द्वारा किया गया है।

निष्कर्ष रूप में, ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में कंप्यूटर शिक्षा का अध्ययन करने वाले छात्र की समस्या समाधान क्षमता में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया।

प्रस्तावना–

शिक्षा मानव व्यक्तित्त्व सर्वांगीण विकास की आधारशिला हैं, जिसके माध्यम से वह श्रेष्ठतम क्षमताओं के आधार पर जीवन में मौलिक योगदान कर सकें। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शिक्षा व्यक्ति के सर्वत्तोमुखी विकास का सशक्त माध्यम हैं। देश कि आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक उत्थान में सहभागिता 'स्वस्थ नागरिकता' संस्कृति राष्ट्रीय भावना के विकास एवं जनतन्त्र की सफलता में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका हैं। कम्प्यूटर से घर बैठे नई–नई बेबसाइट से हमें शिक्षा विभिन्न क्षेत्रों की जानकारी प्राप्त होती है। कम्प्यूटर के आने से शिक्षा में भी अनेक सुविधाऐं उपलब्ध हुई है। कम्प्यूटर विद्यालयी शिक्षा को प्रभावित करने वाला महत्वपूर्ण पक्ष है, और विद्यालय को समाज का दर्पण कहा जाता है, अतः जैसा समाज होगा, वैसी ही वहाँ की शिक्षा होगी। कम्प्यूटर के द्वारा छात्रों को शिक्षा दी जा रही है। कम्प्यूटर ने ही मानव को अपनी ज्ञानेन्द्रियों की सीमाओं को लांघने का साहस जुटाया है।आज हमारे विद्यालयों में कम्प्यूटर शिक्षा अनिवार्य रूप से कर दी गई है। विद्यार्थी के जीवन में कम्प्यूटर शिक्षा का वही स्थान होगा, जो कि एक राष्ट्र में एक अध्यापक का स्थान होता है। इसी स्थान पर अध्यापक हमें शिक्षा देता है। उसी प्रकार से हमें कम्प्यूटर शिक्षा प्रदान करायेंगा।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

विद्यार्थियों में कम्प्यूटर शिक्षा का महत्व इतना बढ़ गया कि उसके बिना शिक्षा अधुरी सी मानी जाती है।

सामान्यतः जब मस्तिष्क में जब कोई तनाव उत्पन्न होता है तो इसका अर्थ है कि व्यक्ति के समक्ष कोई समस्या है समस्या समाधान वह प्रतिमान है।जिसमें सृजनात्मक–चिन्तन तथा तर्क होता है, जिन व्यक्तियों ने समस्या समाधान योंग्यता का प्रभावी सर्जन क्रिया है, वे अधिक बुद्धिमान व्यक्तियों से जटिल समस्याओं का शीघ्र हल कर सकते हैं।

प्रस्तुत शोधकर्त्ता ने कम्प्यूटर शिक्षा प्राप्त करते समय समस्या समाधान योग्यता को बड़े उत्साह से जाँचने का प्रयास किया है अतः शोधकर्ता ने अपने लघुशोध का शीर्षक ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के कम्प्यूटर शिक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन को रखने की अभिशंसा की हैं।

समस्या कथन–

"ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के कम्प्यूटर शिक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों की समस्या–समाधान योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन।"

समस्या का औचित्य–

शैक्षिक क्षेत्र के आधुनिक जीवन में कम्प्यूटर के बढ़ते महत्व और उपयोग के बारे में आये दिन सुनते हैं रेल्वे की बुकिंग, आफिसों में स्कूलों में, विश्वविद्यालय में, बैंको में और कई स्थानो पर कम्प्यूटर दिख जाता हैं अखबारों में दिन प्रतिदिन इसकी महिमा का बखान करते रहते हैं। सभी प्रचार माध्यमों में कम्प्यूटर को एक तरह की महिमा से मंडित पेश किया जाता हैं जिससे सामान्य आदमी के लिए कम्प्यूटर से अपरिचित का दायरा बढ़ जाता हैं। आज जो शिक्षा विद्यालयों में कम्प्यूटर के माध्यम से दी जाती है। कम्प्यूटर द्वारा शिक्षा गृहण करते समय विद्यार्थियों को अलग–अलग व्यावसायिक रुचि एवं आकांक्षा का पता चलता है। आकांक्षाओं के आधार पर ही व्यक्ति के व्यक्तित्व के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त की जा सकती है तथा उसका वर्गीकरण भी किया जा सकता है, जैसे आशावादी, निराशावादी, प्रयोजनवादी आदि जो यथार्थवादी होते है वे अपने पूर्ण अनुभव के आधार पर आकांक्षा स्तर विकास तथा संस्कृति संरक्षण एवं संवर्धन एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में होता है। इसका कारण यह है कि इसकी लोकप्रियता में बहुत बढ़ी हुई है जिसके चलतें सभी क्षैत्रों में कम्प्यूटर शिक्षा और कम्प्यूटर से परिचय कराने के लिए कई कार्यक्रम चल रहे हैं विद्यालयों, कॉलेजों तथा विश्वविद्यालय में कम्प्यूटर विज्ञान, कम्प्यूटर एप्लीकेशन, कम्प्यूटर मैनजमेंट, कम्प्यूटर इंजीनियरिंग, कम्प्यूटर डिप्लोमा, आदि कई पाठ्यक्रम चलाते जाते हैं। विद्यार्थियों में कम्प्यूटर शिक्षा का महत्व इतना बढ़ गया कि उसके बिना शिक्षा अधुरी सी मानी जाती है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

समस्या के उद्देश्य–

1. ग्रामीण क्षेत्र के कम्प्यूटर शिक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों की समस्या–समाधान योग्यता का अध्ययन करना।
2. शहरी क्षेत्र के कम्प्यूटर शिक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों की समस्या–समाधान योग्यता का अध्ययन करना।
3. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के अध्ययनरत विद्यार्थियों की समस्या–समाधान योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना–

1. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के कम्प्यूटर शिक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों की समस्या–समाधान योग्यता में सार्थक अन्तर नहीं होता हैं।

प्रस्तुत शोध कार्य का परिसीमन–

1. शोधकर्त्ता ने अपने शोध का क्षेत्र ग्रामीण एवं शहरी जिला रखा हैं।

2. ग्रामीण एवं शहरी के क्षेत्र निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों का चयन किया हैं जो कम्प्यूटर शिक्षा में अध्ययनरत हैं।

3.ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के कम्प्यूटर शिक्षा में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का चयन किया हैं, जो कक्षा IX & X में अध्ययनरत है।

न्यादर्श–

1. शोधकार्य में न्यादर्श के रुप में 100 विद्यार्थियों को लिया है।
2. ग्रामीण क्षेत्र की कम्प्यूटर शिक्षा में अध्ययनरत 50 विधार्थियो को लिया है।
3. शहरी क्षेत्र के कम्प्यूटर शिक्षा में अध्ययनरत 50 विद्यार्थियो को लिया गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त शोध विधि–सर्वेक्षण विधि

शोधकार्य में प्रस्तुत लद्यु शोध प्रबन्ध में सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया हैं।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण:– प्रस्तुत शोधकार्य में सम्बधित तथ्यों का संकलन करने के लिए अध्ययन में निम्नलिखित उपकरणों का चयन किया गया है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

क्र.स.	प्रश्न पत्र का नाम	प्रश्न पत्र निर्माता का नाम
01	समस्या–समाधान योग्यता	श्री एल. एन. दुबे

अध्ययन में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों की व्याख्याः–

समस्या–समाधान योग्यता :– स्मिथ के शब्दों मे– ''समस्या समाधान योग्यता स्व–प्रत्यय के प्रति सुरक्षा का एक भाव है। साधारण शब्दों में समस्या समाधान योग्यता का तात्पर्य यह है कि किसी व्यक्ति को अपनी योग्यता एवं शक्ति पर ही किये जाने वाले कार्य के लिए निर्भर रहना चाहिए। तथा स्वयं के भरोसे एवं विश्वास पर निर्भर रहना चाहिए यह प्रायः देखने मे अनुभवों की कमी से असफलता के घेरे मे आने के भय से समस्या समाधान खो बैठते है। यह अभिवृति उचित नही है यदि दृढ निश्चय किया जायेतो प्रत्येक कार्य को सफलतापूर्वक किया जा सकता है।

किसी बालक मे पाये जाने वाले समस्या समाधान योग्यता को अनेक तरीको से मापा जा सकता है–

1.अवलोकन द्वारा 2.चैक लिस्ट तकनीक द्वारा
3.प्रश्नावली तकनीक द्वारा 4.वर्गाक्रम मापनी द्वारा

अनुसंधान में प्रयुक्त सांख्यिकीः– प्रस्तुत अनुसंधान कार्य में निम्न सांख्यिकी का प्रयोग किया गया हैः–

1. मध्यमान 2. प्रमाप विचलन 3. टी–टेस्ट

प्रस्तुत शोध का विश्लेषण

सारणी

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के कम्प्यूटर शिक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियो की समस्या–समाधान योग्यता के अंको का मध्यमान प्रमाप विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात (N=50)

क्र. सं.	क्षेत्र	मध्यमान	प्रमाप विचलन	क्रातिक अनुपात
1	ग्रमीण	74.1	2.59	0.729
2	शहरी	73.64	3.63	

उपरोक्त सारणी का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की समस्या–समाधान योग्यता के अंको का मध्यमान (74.1) तथा प्रमाप विचलन (2.59) है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

जबकि शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की समस्या–समाधान योग्यता के अंको का मध्यमान (73. 64) तथा प्रमाप विचलन (3.63) हैं। ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियो की समस्या–समाधान योग्यता के अंको का मध्यमानों के अन्तर का अनुपात (0.729) है। जो (0. 01) विश्वास स्तर के मान (2.58) से कम है। अर्थात मध्यमानों को सांख्यिकी दृष्टि से सार्थक अन्तर नही पाया गया है। अतःउपर्युक्त परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

अतः ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के कम्प्यूटर शिक्षा मे अध्ययनरत विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता मे कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया।

लेखाचित्र

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की समस्या–समाधान योग्यता के अंको का मध्यमान, प्रमाप विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात

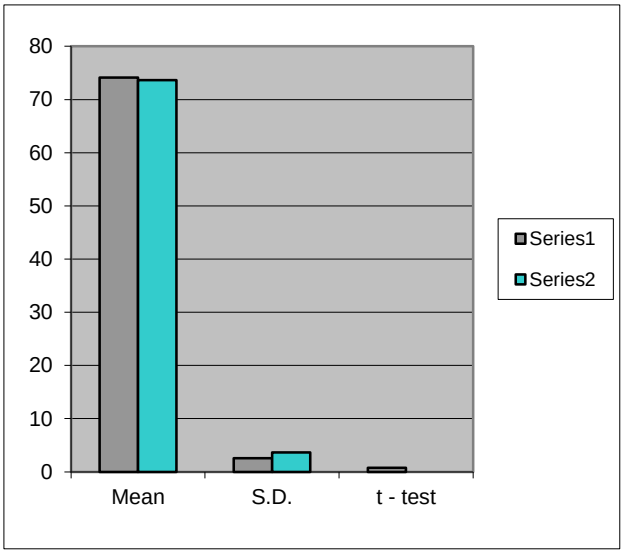

शोध कार्य के प्रमुख निष्कर्ष :–

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के कम्प्यूटर शिक्षा मे अध्ययनरत विद्यार्थियों की समस्या–समाधान योग्यता मे कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया।

भावी शोध हेतु सुझाव :–

1. प्रस्तुत शोध मे शोधकर्ता ने न्यादर्श मात्र 100 विद्यार्थियो तक सीमित रखा हैं किन्तु इससे भी बडा न्यादर्श लेकर इसे और भी अधिक प्रतिनिधित्वपूर्ण बनाया जा सकता है।

2. इस शोध कार्य मे सैकण्डरी स्तर वाले विद्यार्थियों को लिया गया है। भावी शोध हेतु सीनियर सैकण्डरी एवं महाविद्यालयो के विद्यार्थियो को लिया जा सकता है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

3. प्रश्नावली के कारण अवलोकन एवं साक्षात्कार विधि आदि उपागमें के आधार पर अध्ययन को महत्वपूर्ण बनाया जा सकता है।

4. विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकाक्षा एवं समस्या समाधान योग्यता पर गहन और विस्तृत अध्ययन किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. बेस्ट जान. डब्ल्यू. : ''रिसर्च इन एजूकेशन'' प्रेंटिस हाल, नई दिल्ली – 1963
2. ढ़ोढ़ियाल सच्चिदानन्दः अरविन्द फाटक : ''शैक्षिक अनुसंधान का विधि शास्त्र'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर
3. डाँ. कपित H. K. : ''अनुसंधान विधियाँ'' हर प्रसाद भार्गव पुस्तक प्रकाशक 4/230 कचहरी घाट आगरा
4. गैरेट हेनरी ई.& वुडवर्थ R. S. : ''शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी'' कल्याणी पब्लिशर्स, लुधियाना
5. डाँ. माथुर S. S. : ''शिक्षा मनोविज्ञान'' विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
6. डाँ. भार्गव महेश : ''आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन'', H. P. भार्गव बुक हाऊस, आगरा
7. डाँ. बालिया S. डाँ. अरोड़ा R. डाँ. शर्मा O.P. : ''शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर
8. गुड कार्टर वी : ''इन्ट्रोडशन ऑफ एजुकेशन रिसर्च'' विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
10. सुखिया एवं मल्होत्रा : 'शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व'', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
11. शर्मा आर. ए. : ''शिक्षा अनुसंधान'' मेरठ इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ
12. पेरविन , एल. ए. : प्योर एसेसमेन्ट एण्ड रिसर्च , 1980
13. पेस्टोनी , डी. एम . अख्तर : वेल्यूज ऑफ मेल एण्ड फिमेल
14. रूहेला , एस . पी . : ह्युमन वेल्यूज एण्ड एज्यूकेशन स्टेर लिंग पब्लिसर , दिल्ली, 1986

15. गैस्ट, एन दृ डी. : शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग

16. कल्पना एवं पंकज शर्मा : कम्प्यूटर शिक्षा शिक्षण, राधा प्रकाशन, आगरा 2005

17. अमित सुखीजा : कम्प्यूटर साक्षरता एवं शैक्षिक उपयोग अरिहंत शिक्षा प्रकाशन, जयपुर